1

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी

Arya Sandesh TV

www.AryaSandeshTV.com

आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

वर्ष 44, अंक 47 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 4 अक्तूबर, 2021 से रविवार 10 अक्तूबर, 2021

विक्रमी सम्वत् 2078 सृष्टि सम्वत् 1960853122

दयानन्दाब्द : 198 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर के तत्वावधान में पञ्चदिवसीय वैदिक वांग्मय कार्यशाला सम्पन्न

वैदिक विद्वानों ने वेद मन्त्रों के वैज्ञानिक रहस्यों को सरल भाषा में समझाया

महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास जोधपुर द्वारा 29 सितंबर से 3 अक्टूबर 2021 तक वैदिक वांग्मय कार्यशाला का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन कार्यक्रम का आरंभ आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ से हुआ। यज्ञ में न्यास के प्रधान श्री विजय सिंह भाटी, मंत्री- आर्य किशन लाल गहलोत, कोषाध्यक्ष जय सिंह गहलोत, उप मंत्री यशपाल आर्य आदि अन्य अनेक क्षेत्रीय गणमान्य अतिथिगण सपरिवार सम्मिलित हुए। कार्यशाला में आचार्य वरुण देव जी, डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के

कार्यशाला के अवसर पर ओ३म् ध्वज फहराते हुए आर्यनेता एवं कार्यकर्ता

प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, डॉ. नरायण शास्त्री जी, पूर्व लोकायुक्त न्यायमूर्ति श्री सज्ज्न सिंह कोठारी जी ने वैदिक सन्देश दिए। डॉ. प्रशस्य मित्र शास्त्री जी ने वेद के गूढ़ रहस्यों को अपनी सरल सहज भाषा में प्रस्तुत किया। आचार्य वरुण देव जी ने वैदिक वांग्मय का परिचय देते हुए बताया की वेद स्वतः प्रमाण होने से उनकी व्याख्या करते समय वाक्य एक्यवाक्यता का ध्यान रखने से वेद भाष्य में दोष नहीं होता और वेदों के अर्थ खुलते जाते हैं। वेदों की व्याख्या स्वयं वेद भी करते हैं, ऋषियों ने वेदों की व्याख्या के लिए

- *शेष पृष्ठ 3 पर*

पंचदिवसीय वैदिक वांग्यम कार्यशाल के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित करते महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास के कार्यकारी प्रधान श्री विजय सिंह भाटी, मन्त्री श्री किशनलाल गहलोत एवं अन्य पदाधिकारी। कार्यकाशाला में उपस्थित आर्य जनसमूह।

कोलकाता में यजुर्वेद के बंगला भाषानुवाद का लोकार्पण समारोह सम्पन्न

मानवता की भलाई के लिए अनुवादक श्री सतीश मण्डल जी द्वारा किया गया कार्य ऐतिहासिक, अदभुत और अनुपम - धर्मपाल आर्य

2 अक्टूबर 2021 आर्य समाज कलकत्ता। आर्य समाज वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों को जन जन तक पहुंचाने के लिए हमेशा से कृतसंकल्पित रहा है। इसके लिए महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने सम्पूर्ण मानव जाति पर उपकार करते हुए वेद के पढ़ने पढ़ाने और सुनने सुनाने का नियम आर्य समाज के नियमों में प्रमुखता से उदघोषित किया है। महर्षि चाहते थे कि पूरा मानव समाज वेदों के अनुसार ही जीवन यापन करे, वेदों की शिक्षा सब अपनाएं, सारा संसार आर्य

आर्यसमाज विधान सरणी कोलकता द्वारा प्रकाशित यजुर्वेद बंगलानुवाद का विमोचन करते आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य एवं आर्यसमाज के अधिकारी, कार्यकर्ता एवं सदस्यगण

बने, सब के जीवन में सुख शांति और समृद्धि हो, व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और दुनिया अपने अपने स्तर पर कर्तव्य परायण हो। महर्षि दयानंद जी ने कठोर तप करते हुए वेदों के भाष्य भी किए। महर्षि के अधूरे सपने को साकार करते हुए वेदों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए आर्य समाज कलकत्ता द्वारा महर्षि जी द्वारा किए हुए यजुर्वेद भाष्य का बंगला भाषा में अनुवाद किया गया जो कि अपने आप में एक महान उपलब्धि है। इसके

- *शेष पृष्ठ 7 पर*

देववाणी-संस्कृत

प्रवाह से बचें

वेद-स्वाध्याय

य ईं चकार न सो अस्य वेद य ईं ददर्श हिरुगिन्नु तस्मात्।
स मातुर्योना परिवीतो अन्तर्बहुप्रजा निर्ऋतिमा विवेश।। -ऋ. 1/164/32
ऋषिः **दीर्घतमा**।। देवता- **विश्वेदेवाः**।। छन्दः **त्रिष्टुप्**।।

शब्दार्थ - यः = यह मनुष्य **ईम्** = यह जो कुछ **चकार** = करता है **अस्य** = इस किये को **सः न वेद** = वह नहीं जानता। **यः** = वह मनुष्य **ई ददर्श** = यह जो कुछ देखता है वह **तस्मात्** = उस देखने वाले मनुष्य से **नु हिरुक् इत्** = निःसन्देह छिपा हुआ ही है। **सः** = ऐसा वह मनुष्य **मातुः योना अन्तः** = माता के गर्भाशय में **परिवीतः** = (झिल्ली से और अज्ञान से) ढका हुआ **बहुप्रजाः** = बार-बार जन्म लेता हुआ और बच्चे पैदा करता हुआ **निर्ऋतिम् आविवेशः** = बड़े घोर कष्ट में प्रविष्ट होता जाता है।

विनय- मनुष्य संसार-सागर में डूबता जाता है। +मनुष्य ज्यों-ज्यों 'बहुप्रजा' होता जाता है त्यों-ज्यों यह 'निर्ऋति' में-घोर कष्ट में-पड़ता जाता है। विषय-ग्रस्त हुआ मनुष्य इस संसार में एक ही कार्य समझता है, अपने बच्चे पैदा करना एवं, प्रकृति में अपने विस्तार को नाना प्रकार बढ़ाता जाता है। इसीलिए वह बार-बार जन्म पाता है, बार-बार जन्म के घोर कष्टों को अनुभव करता है। ऋषि लोगों ने देखा है कि माता की योनि में आये हुए जीव को बार-बार बड़ा भारी मानसिक क्लेश भोगना पड़ता है। उस समय वह जीव केवल झिल्ली से ढका हुआ नहीं होता, किन्तु घोर अज्ञान से भी ढका हुआ होता है, क्योंकि 'बहुप्रजाः' के मार्ग पर जाना अज्ञान से ढके जाने से ही होता है। मनुष्य पागल इसलिए है, क्योंकि वह जो दिन-रात अन्धाधुन्ध काम करता है उसे वह जानता नहीं, यूँ ही करता जाता है। मनुष्य खाना-पीना, चलना- फिरना, प्रेम करना, द्वेष करना आदि जो कुछ करता है उसे वह कुछ भी नहीं जानता कि मैं यह क्या कर रहा हूँ, क्यों कर रहा हूँ, इसका क्या प्रभाव होगा। वह नहीं जानता कि इसका ही फल उसे भोगना होगा। वह नहीं जान पाता कि पहले जन्मों में वह न जाने क्या-क्या कर चुका है। अन्धाधुन्ध वह करता जाता है। इसी प्रकार का उसका सब संसार को देखना है। संसार में वह मनुष्य स्त्री, पशु, पहाड़, नदी, आकाश, सभा, समाज, बड़े-बड़े आनन्द दायक दृश्य और बड़े-बड़े रुलाने वाले दृश्य, इन सबको सोते-जागते देखता जाता है, परन्तु वास्तव में वह इन किन्हीं भी वस्तुओं को नहीं देखता। ये सब वस्तुएं उससे वास्तव में छिपी ही रहती हैं, निःसन्देह छिपी ही रहती हैं। वह देखता हुआ भी किसी भी वस्तु का तत्त्व नहीं देख पाता। इसीलिए वह 'बहुप्रजाः' होने के- प्रकृति में ग्रस्त होने के-मार्ग का अवलम्बन करता है और 'निर्ऋति' में पड़ता जाता है। निर्ऋति1 (पृथिवी) के इस अन्धकार में धँसते जाने की जगह, मनुष्य 'द्यौः' के प्रकाश की ओर जाने लगे, यदि वह इस संसार में जो कुछ करे उसे जानने लगे और जो कुछ देखे उसे साक्षात् करने लगे तभी उसका कल्याण है।

1. निर्ऋतिः=(1) घोर कष्ट, (2) पृथिवी। ये दोनों अर्थ निर्ऋति शब्द के होते हैं। +मनुष्य 'का हुआ' (परिवीत) होने से ही इस संसार में पागल तथा अंधे की भांति रहता है।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

सड़क पर दीवाली ज्ञान, लेकिन नमाज-मजार पर विज्ञापन नहीं!

हर दीवाली एक विज्ञापन ऐसा जरूर आता है जिसमें देश की बहुसंख्यक आबादी की भावना को कुचला जाता है। इस बार फिर ऐसा ही हुआ। गाड़ी के टायर बनाने वाली एक कम्पनी सीएट टायर के इस वर्ष दीवाली स्पेशल विज्ञापन में अभिनेता आमिर खान ये कहते हुए दिखाए गये हैं कि सड़क पटाखे जलाने के लिए नहीं है। पटाखे अपनी सोसायटी के अन्दर जलायें। बात ठीक है लेकिन क्या ऐसा ज्ञान ईद पर सड़क पर नमाज और बीच सड़कों पर बनी मजारों के विषय में दिया जा सकता है कि सड़क नमाज और मजार के लिए नहीं हैं?

अगर अभिनेता आमिर खान और सीएट टायर के मालिक हर्ष गोयनका सोचते हों कि इससे हिन्दुओं की भावना आहत होगी तो वो बिलकुल गलत है। इन चीजों से हमारी भावना बिलकुल आहत नहीं होती। बल्कि हमें तो आदत हो गयी है। पिछले साल तनिष्क के विज्ञापन में एक हिन्दू महिला को लेकर लव जिहाद को प्रमोट किया था। इससे पिछले साल डोमिनोज के दीवाली स्पेशल विज्ञापन में मिठाई की जगह नॉनवेज पिज्जा को प्रमोट किया गया था। इससे पहले भी कभी होली तो कभी दीवाली पर ऐसे एड आते रहे हैं तो हम अब बुरा नहीं मानते, न हमारी भावना कमजोर होती है, बल्कि मजबूत होती है। और इससे देश के सेकुरलिज्म पर सोचने-समझने की ताकत मिलती है।

पर ये लोग बुरा मान जाते हैं, जब लोग कहते हैं कि हलाला गलत है, तीन तलाक गलत है। सड़क, पार्क या किसी के घर में घुसकर नमाज पढना गलत है। तो ये लोग ही मुंह चढ़ा लेते हैं। जब कोई सातवीं सदी के खलीफा का चित्र बना जाये, या उसके बारे में कुछ कह देता है यही लोग किसी कमलेश तिवारी का गला रेत देते हैं। तो कभी फ्रांस में किसी टीचर की हत्या कर देते हैं। कभी नोर्वे जल उठता है तो कभी बसीरहाट का बाजार लूट लेते हैं। सड़क पर नमाज पढने से रोकें तो बसों में आग लगा देते हैं।

अब सीएट टायर के मालिक को ही ले लीजिये, उसे टायर खरीदने वालों से पता नहीं क्या एलर्जी है। सीएट टायर के मालिक हर्ष गोयनका कभी साधुओं का मजाक उड़ाते हुए तस्वीर ट्वीट करते हैं जिसमें लंगोट की तुलना मास्क से करते हैं। तो कभी शिव को लेकर गन्दा चुटकुला पोस्ट करते हैं। लेकिन ईद की बधाई देते हैं।

अब आमिर खान इस बार दीवाली के मौके पर सड़कों पर पटाखे नहीं चलाने की अपील कर रहे हैं, मसलन हिन्दुओं में जागृति पैदा कर रहे हैं। हिन्दू कम समझदार हैं वो हिन्दुओं को लगातार समझदारी का पाठ पढ़ा रहे हैं। घुंघट प्रथा गलत है, एक से अधिक बच्चे पैदा करना गलत है, मंदिरों में जाना गलत है, कम उम्र में शादी करना गलत है। बस सत्यमेव जयते में कभी आप लोगों को नहीं समझा पाए कि बकरीद पर जीवों का कत्ल करना गलत है। सड़कों पर मोहर्रम का जुलूस निकालना गलत है। वो नहीं समझा पाए कि सड़के पटाखों के लिए नहीं है तो साल के 365 दिन पांच बार सड़क पर नमाज पढ़ने के लिए भी नहीं हैं। उन पर भी सीएट के टायर चलते हैं। मुताह निकाह जिसमें 10 साल की लड़की 70 साल के बूढ़े को तीन से छ महीने के लिए ब्याह दी जाती है वो गलत है। बुर्का गलत है, हलाला गलत है, तीन तलाक गलत है और लव जिहाद गलत है। वो हिन्दुओं को समझा रहे हैं कि मंदिर में जाने से भगवान नहीं मिलता, नहीं समझा पाया कि हज पर जाने से अल्लाह नहीं मिलता।

हिन्दू ना समझ हैं उसे समझाना पड़ता है। अब दस बीस सेकण्ड में कोई सन्देश देते हुए अपने माल को बेचना कोई आसान काम नहीं है, और अगर माल के साथ

.....इस वर्ष दीवाली स्पेशल विज्ञापन में अभिनेता आमिर खान ये कहते हुए दिखाए गये हैं कि सड़क पटाखे जलाने के लिए नहीं है। पटाखे अपनी सोसायटी के अन्दर जलाये। बात ठीक है लेकिन क्या ऐसा ज्ञान ईद पर सड़क पर नमाज और बीच सड़कों पर बनी मजारों के विषय में दिया जा सकता है कि सड़क नमाज और मजार के लिए नहीं हैं? ....क्या मोहर्रम पर सड़कों पर खुद को प्रताड़ित करते बच्चों को बचाने के लिए 'रेड लेबल चाय' कट्टरपंथी मुस्लिमों का दिमाग खोल सकती है? क्या सड़क पर कटते जानवरों को देखकर डरे किसी हिन्दू बच्चे को कोई मुस्लिम बच्ची बचाकर मंदिर तक छोड़कर आएगी? क्या होली के रंगों को दाग बताने वाले खून के धब्बों को दाग बताने के हिम्मत जुटा पाएंगे? क्या बकरीद पर सीएट टायर जानवरों का काटने का विरोध कर सकता है? क्या तनिष्क के विज्ञापन में किसी तिलक लगाए हिन्दू को किसी हिजाब वाली महिला के साथ दिखाया जा सकता है? यदि नहीं तो आखिर ये सुधार की तलवार और सामाजिक सद्भावना, सब एकतरफा ही क्यों हैं? ....

एजेंडा भी बेचना हो तो क्या कहने। लेकिन टीवी देखते समय इसे समझने के लिए संवेदनशीलता चाहिए।

पिछले दिनों एक अख़बार में हेयर डिज़ाइनर जावेद हबीब के सैलून का विज्ञापन छपा, जिसमें दिखाया गया कि हिन्दू देवी-देवता उनके पार्लर में सज संवर रहे हैं। विज्ञापन को टैग लाइन दी गई कि हमारे यहां भगवान भी आते हैं। इसके बाद एक विज्ञापन ऑस्ट्रेलिया की एक कम्पनी ने जारी किया जिसमें हिन्दू देवता गणेश जी मेमने का मीट खाते हुए दिखाए गए हैं। न सिर्फ खाते हुए बल्कि बेचते हुए भी दिखाए गए।

सर्फ एक्सल के विज्ञापन को सबने देखा होगा। इस विज्ञापन में दिखाया गया था कि एक मुस्लिम बच्चा मस्जिद में नमाज पढ़ने इसलिए नहीं जा पाता, क्योंकि मोहल्ले में होली खेली जा रही थी। इस विज्ञापन में जहां एक तरफ मुस्लिम बच्चे को मासूम, होली से 'डरा हुआ' दिखाया जाता है। तो वहीं हिन्दुओं को गैर हिन्दुओं पर जबरदस्ती रंग डालते हुए दिखाया जाता है।

क्या ऐसे विज्ञापन दूसरे मत-पंथों पर बन सकते हैं? क्या मोहर्रम पर सड़कों पर खुद को प्रताड़ित करते बच्चों को बचाने के लिए 'रेड लेबल चाय' कट्टरपंथी मुस्लिमों का दिमाग खोल सकती है? क्या सड़क पर कटते जानवरों को देखकर डरे किसी हिन्दू बच्चे को कोई मुस्लिम बच्ची बचाकर मंदिर तक छोड़कर आएगी? क्या होली के रंगों को दाग बताने वाले खून के धब्बों को दाग बताने के हिम्मत जुटा पाएंगे? क्या बकरीद पर सीएट टायर जानवरों का काटने - *शेष पृष्ठ 7 पर*

विजया दशमी (दशहरा) पर विशेष लेख

नवरात्र-रामलीला और विजयादशमी कब, क्यों और कैसे?

***....पर्व त्योहारों से सजी-धजी भारतीय संस्कृति और सभ्यता के अनुसार प्रत्येक पर्व हमें प्रेरणा देता है जीवन जीने की कला सिखाता लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हम बिना सोचे-समझे पर्व मनाते जाएं और हमें यह भी ना पता हो कि पर्व कौन-सा है? इसके पीछे रहस्य क्या है? इसकी प्रेरणा क्या है? इसकी मान्यता और परंपरा ने क्या छुपा हुआ है? अगर हम इन सब बातों पर ध्यान नहीं देंगे.....* पर्व केवल अवकाश का दिन नहीं होते अपितु प्रेरणा भी देते हैं, हमें अपने हर पर्व पर प्रेरणा लेनी चाहिए, तभी पर्व मनाने सार्थक होंगे।**

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी विजया दशमी का पर्व हमारे सामने है। पूरे भारतवर्ष के अंदर नवरात्रों के बाद विजया दशमी के अवसर पर रावण का पुतला जलाया जाएगा। पूरे नवरात्र में रामलीला के मंचन किए जाएंगे। राम, लक्ष्मण, सीता, भारत, हनुमान सुग्रीव, अंगद, जामवंत आदि महापुरुषों का चरित्र चित्रण किया जाएगा। वहीं रावण, मेघनाथ विभीषण, मारीच और अनेकानेक रामायण के पात्रों के चरित्र को लेकर भी पूरा अभिनय किया जाएगा। लेकिन यह सब कुछ बिल्कुल एक नाटक जैसा ही रहेगा, न ही अभिनय करने वालों को वास्तविक तथ्यों या सिद्धान्तों से कोई मतलब और न ही अभिनय को देखने वालों को कोई प्रेरणा लेने की जरूरत? बस हो-हुल्ला होकर यह देशव्यापी कार्यक्रम अगले वर्ष आने वाले नवरात्रों तक के लिए आया गया हो जाएगा।

रामलीला और विजया दशमी से पूर्व हम नवरात्रों पर विचार करते हैं। नवरात्र के पर्व पर व्रत उपवास रखना, व्रत के नाम पर कुट्टू, सिंघाड़े , सामक के चावल, आलू की टिक्की, चाट पकोड़ी, दही आलू, चिप्स, मिष्ठान्न के स्थान पर चौलाई के लड्डू, पेठा, बर्फी, कलाकन्द, दूध ,जूस, शर्बत आदि खा-खाकर शरीर को स्वस्थ बनाने के बजाए उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम कर लेते हैं। फिर बाद में ऐसे लोग जब बीमार पड़ते हैं तो बड़े गर्व से कहते हैं कि थोड़ा बहुत तो फर्क पड़ता ही है क्योंकि ये बहुत बड़ा तप जो है। इन तपस्वियों से कोई पूछे कि भाई इस तरह तप करने से क्या फायदा, जो शरीर बीमारी से ग्रस्त हो जाए। नवरात्र तो मौसम परिवर्तन के समय स्वास्थ्य को उत्तम, मन को निर्मल और बुद्धि को पवित्र करने का उपक्रम है। इन दिनों में अल्पाहारी होकर, नीम्बू पानी, शहद, दूध, दही, छाछ, लस्सी पर कल्प करना, फल फ्रूट पर रहना, ज्यादा जले, भुने, मिर्च-मसाले और चिकनाई युक्त भोजन से परहेज रखना, स्वाद के लिए नहीं, स्वास्थ्य के लिए भोजन करना, लेकिन लोग केवल मौज मनाने के लिए, दिखावे के लिए नवरात्र पर व्रत रखते हैं, उन्हें इन पर्व त्योहारों की प्रेरणाओं से कोई मतलब नहीं।

रामलीला के आयोजन भारत देश के गांव, शहर, नगर, महानगर और गली मोहल्लों में अपने-अपने स्तर पर किए जाते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम, माता सीता, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, कौशल्या, केकई और सुमित्रा, महावीर हनुमान, सुग्रीव, अंगद, जामवंत आदि महापुरुषों के जीवन चरित्र विभिन्न पात्रों द्वारा दर्शाए जाते हैं। वस्तुत: रामलीला का पूरा मंचन अपने आप में अत्यंत प्रेरणा दायक हो सकता है, क्योंकि श्री रामचन्द्र महाराज का जीवन तप, त्याग से परिपूर्ण था, रघुकुल के राघवेंद्र मर्यादा की अनूठी शान थे, कर्तव्य परायणता के पुरोधा, धर्म के रक्षक, मातृ-पितृ भक्त, अपने वचन के पालक, धर्मात्मा राजा, आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श भाई , आदर्श शिष्य, आदर्श मित्र इत्यादि महान गुणों से युक्त थे। प्रतिदिन यज्ञ करना, यज्ञों की रक्षा करना, दुष्टों को दंड देना और वेदों के अनुसार जीवन यापन करना आदि उनके विशेष गुण थे, श्री राम जी के आदर्शो का पालन करने से धरती पर स्वर्ग स्थापित हो सकता है। राम केवल भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व के आदर्श है, लेकिन केवल उनके नाम पर नाटक करना, बड़े बड़े लाउडस्पीकर लगाकर रात भर शोर मचाना पर्याप्त नहीं। है बल्कि उनकी शिक्षाओं के अनुसार देश, धर्म की रक्षा करना, वीरता धारण करना, दुष्ट आताताइयों को दलन करके धरती पर सुख शांति की स्थापना करना आवश्यक है। आज अगर राम को मानने वाले राम की शिक्षाओं को मानकर अपने वैदिक धर्म के सही प्रचार प्रसार करने की ठान लें, तो जो लोग समाज में अराजकता फैला रहे हैं उन्हें सबक सिखाया जा सकता है। अपने धर्म, संस्कृति और संस्कारों की रक्षा की जा सकती है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की जन्मभूमि अयोध्या पर काफी लंबे समय तक विवाद रहा, आज जब वहां राम मंदिर निर्माण का कार्य युद्धस्तर पर चल रहा है, पूरे विश्व के लोगों का सपना साकार हो रहा है तो इस अवसर पर रामलीला के मंचन में केवल अभिनय नहीं कुछ रचनात्मक और कल्याणकारी संकल्प भी समाज को लेने चाहिए, हमें अपने देश,धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रति निष्ठावान होने का संकल्प लेना चाहिए, हमें अपने महापुरुषों के दिखाए रास्ते पर चलने का व्रत लेना चाहिए, तभी हमारा रामलीला का मंचन करना सार्थक होगा।

इसी क्रम में विजयादशमी के पर्व पर थोड़ा विचार करते हैं। विजयादशमी को लेकर समाज की मान्यता है कि इस दिन राम ने रावण पर विजय प्राप्त की थी, असत्य पर सत्य की, अन्याय पर न्याय की विजय का पर्व है विजया दशमी। विजया दशमी को लेकर असत्य पर सत्य की विजय की भावना तो ठीक है लेकिन इस दिन राम ने रावण को मारकर लंका को जीतने की बात ठीक नहीं है। वस्तुत: श्रीरामजी की रावण पर विजय से विजयादशमी का कोई सम्बन्ध नहीं है। बल्कि प्राचीन कालीन परम्परा के अनुसार इस दिन राजा महाराजा लोग अपनी सेनाओं को लेकर नियम पूर्वक विजय यात्रा का उपक्रम करते थे, चौमासे के बाद मनाए जाने वाले इस विजयादशमी या जिसे दशहरा भी कहते हैं इस पर्व पर क्षत्रिय भी अपने अस्त्र शस्त्रों की रक्षा के लिए उनकी साफ-सफाई करते थे, इसी तरह वैश्य समाज भी अपने व्यापार का आरम्भ करते थे। समाज में चारों तरफ उत्सव का वातावरण होता था। आजकल इस दिन रावण दहन किया जाता है। बड़े बड़े मेले सजते हैं, बड़े बड़े राजनेता रावण दहन करते हैं, लेकिन कितनी अजीब बात है कि हर वर्ष रावण की लंबाई- चौड़ाई बढ़ती जा रही है, हर वर्ष उसे जलाते हैं, बुराई पर अच्छाई की जीत के नारे लगाते हैं, असत्य सत्य की विजय का ढोल पीटते हैं, पर रावण का आकार बढ़ता ही जा रहा है। समाज में झूठ, चोरी, लूट-पाट, हत्याएं, बलात्कार, भ्रष्टाचार, अत्याचार पापाचार बढ़ता ही जा रहा है, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार का रावण ऊंचे से ऊंचा होता जा रहा है, लगातार बढ़ता जा रहा है, इसलिए पर्व केवल अवकाश का दिन नहीं होते अपितु प्रेरणा भी देते हैं, हमें अपने हर पर्व पर प्रेरणा लेनी चाहिए, तभी पर्व मनाने सार्थक होंगे।

प्रथम पृष्ठ का शेष

वैदिक विद्वानों ने वेद मन्त्रों के ....

उपवेद, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक, उपनिषद, दर्शन आदि बनाए हैं, जो वेद सहित वैदिक वांग्मय कहलाते हैं। वर्ष 2009 में संस्कृत साहित्य में साहित्य अकादमी पुरस्कार से अलंकृत कवि और वैदिक विद्वान डॉ प्रशस्य मित्र शास्त्री जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में गायत्री सहित वेद मंत्र के अर्थ में निहित गूढ़ रहस्यों को बहुत ही सरलता से समझाया और कहा कि जिस देश के गुरुकुल में पाले हुए तोते मैना भी वेद मंत्रों को कंठस्थ कर विद्यार्थियों के अटक जाने पर उसकी पूर्ति कर देते थे उस देश में संस्कृत में अरुचि चिन्तनीय और दु:खद है। दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने वेद की महिमा का बखान करते हुए कहा कि वेद ईश्वर की अमृतवाणी है, वेद के स्वाध्याय से ही व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और दुनिया की सच्चे अर्थों में उन्नति सम्भव है। जहां वेद पढ़े और सुने जाते हैं वहां हर तरह की सुख स्मृद्धि और शान्ति का वास होता है।

डॉ. रामनारायण शास्त्री जी, न्यायमूर्ति श्री कोठारी जी ने विशेष उद्बोधन दिए। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा से श्री योगमुनि जी, हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा से श्री कन्हैया लाल आर्य और अन्य प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारी एवं प्रतिनिधिगण उपस्थित रहे। न्यास के कार्यकारी प्रधान श्री विजय सिंह भाटी, मन्त्री श्री किशनलाल गहलोतजी ने उपस्थित आर्यजनों का धन्यवाद किया। पंडित नरेश दत्त के भजनों से सारा वातावरण तरंगायित हो गया। बहुत ही सुन्दर प्रेरक कार्यक्रम प्रेम एवं सौहार्द के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय में यज्ञ के साथ धूमधाम से मनाया गया

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी का 81वां जन्मोत्सव

देशभर की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों ने सोशल मीडिया के माध्यम से भेजी अपनी शुभकामनाएं

1 अक्टूबर 2021; नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी का 81वां जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर श्री शिवा शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया गया। यज्ञ में यजमान श्री योगेश आर्य जी बने, यहां बता दें कि 29 सितंबर 2021 को उनका भी जन्मदिन था, श्री विनय आर्य जी महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, सभा के सभी कार्यकर्त्ता, आर्य मीडिया सेंटर के सभी कार्यकर्त्ता, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के कार्यकर्ताओं सहित सभी उपस्थित महानुभावों ने यज्ञ में आहुति देकर प्रधान जी को शुभकामनाएं दी। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने ऑनलाइन श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी को जन्मदिन की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आपकी प्रेरणाएं निरन्तर हमें प्राप्त होती रहें, उत्तम स्वास्थ्य ओर दीर्घायु आपको प्राप्त हो, आप हमेशा हमारा मार्गदर्शन करते रहें। श्री विनय आर्य जी ने प्रधान जी को जन्मदिन की बधाई भजन के माध्यम से दी, श्री योगेश आर्य जी ने अपनी ओर से एवं अखिल भारतीय दयानन्द सेवा श्रम संघ की ओर भी प्रधान जी को बधाई दी, सारे कार्यकर्ताओं की ओर से अश्विनी आर्य ने बधाई दी। बहुत सुंदर कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसको सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी ने पूरा ऑनलाइन देखा और सराहना करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, महामंत्री ओर उपस्थित जनों का धन्यवाद किया। प्रधान जी ने सभी को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि वर्ष 2024 और 2025 में आर्य समाज के बड़े आयोजन हमारे सामने हैं, हमें मिलजुलकर बड़े बड़े कार्य करने हैं। सभी को बहुत बहुत शुभकामनाएं और धन्यवाद।

शांति पाठ के बाद प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

दिल्ली के अनछुए क्षेत्रों में पहुंचने के लिए आर्यसमाज कृतसंकल्पित : सभा की ओर से विभिन्न प्रकल्पों के द्वारा

सेवा बस्तियों एवं जे.जे. कालोनियों में हो रहें हैं - यज्ञ, भजन, प्रवचन एवं वस्त्र वितरण कार्यक्रम

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत कार्यरत वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प के माध्यम से स्थान स्थान पर यज्ञ, घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ, भजन, प्रवचन के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस अवसर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के सेवा प्रकल्प ''सहयोग'' द्वारा वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति हेतु वस्त्रों व शिक्षा हेतु किताबों, खिलोनों का वितरण करते हुए यज्ञ ब्रह्मा दिनेश आर्य जी ने उद्बोधन देते हुए कहा कि लोग कहते हैं कि भविष्य को किसने देखा? हम कहते हैं कि हमने देखा! जिस तरह एक दीवार बनाते समय ईंट टेढ़ी लग जाए तो वो दीवार टेढ़ी ही खड़ी होगी। ये भविष्य उसका निश्चित है। उसी प्रकार एक देश का भविष्य उसके वर्तमान के नव-निहालों पर हैं। उन्हें जिस तरह के संस्कार आज दिए जाएँगे ठीक वैसा ही भविष्य राष्ट्र का होगा।

दूसरा कार्यक्रम पूर्वी दिल्ली के शिक्षक सदन, सूरजमल विहार में आयोजित किया गया, जहाँ गरीब महिलाओं का हेल्थ चैकअप कराया गया। कार्यक्रम में स्थानीय विधायक श्री ओम प्रकाश शर्मा जी भी उपस्थित रहे।

तीसरा और शाम का कार्यक्रम सुदामा पुरी की क्लस्टर कॉलोनी मोती नगर में वैदिक मन्त्रोंचारण के साथ शुरू हुआ। आचार्य दिनेश शास्त्री जी ने बहुत ही सुंदर उद्बोधन दिया। सभी कार्यक्रमों के अन्त में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकल्प 'सहयोग' के माध्यम से उपस्थित जरुरतमन्द, गरीब, असहाय सभी लोगों को वस्त्रादि का वितरण किया गया।

आपका योगदान - 'सहयोग' के माध्यम से आप इस सेवा का हिस्सा बन सकते हैं। आपके घर में बहुत-सा ऐसा सामान होता है जो आपके काम नहीं आता है किन्तु किसी अन्य के लिए वह बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। आप वह सामान हमें दें, हम उसे हर जरूरतमंदों तक पहुँचाएंगे।

आप हमें 'वस्त्र, पुस्तकें, खिलौने, जूतें, चप्पल, आदि' सामान दे सकते हैं। आप सामान एकत्र करके सहयोग टीम को 9540050322 पर कॉल करें। हमारी गाड़ी आपके घर से सामान लेकर आएगी। आप अपना सहयोग हमारे कार्यालय आकर भी दें सकते हैं। कार्यालय पता है- **आर्य समाज मन्दिर, डी.सी.एम. रेलवे कोलोनी, निकट फिल्मिस्तान, दिल्ली-110007**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत कार्यरत वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प के माध्यम से स्थान स्थान पर यज्ञ, घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ, भजन, प्रवचन के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस अवसर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के सेवा प्रकल्प ''सहयोग'' द्वारा वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति हेतु वस्त्रों व शिक्षा हेतु किताबों, खिलोनों का वितरण किया जा रहा है। प्रान्तीय स्तर पर दिल्ली में सहयोग का कार्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत किया जा रहा है।

3 अक्तूबर, 2021 (रविवार) को दिल्ली में तीन स्थानों पर यज्ञ एवं वस्त्र वितरण के कार्यक्रम सम्पन्न किए गए।

पहला कार्यक्रम बाल सहयोग संस्था कनॉट प्लेस, नई दिल्ली में रह रहे उन बच्चों के साथ किया जो मानसिक और शारीरिक रूप से अक्षम थे। उन्हें नैतिक शिक्षा की बातें बताई गयी और जीवन के संघर्ष को जीतने का हौसला दिया गया।

इस अवसर पर बच्चों को सम्बोधित

ओ३म्
आर्य समाज की एक पहल
SAHYOG
सहयोग®
Powered by NEEL FOUNDATION
A SOCIAL INITIATIVE OF JBM GROUP
आपका सामान-जरूरतमंद की मुस्कान
(नए-पुराने कपड़े, किताबें, खिलौने, जूते-चप्पल आदि देकर सहयोग करें)
dss.sahyog/
dsssahyog/
dsssahyog/
सम्पर्क - 9540050322

बाल बोध

ऊर्जा संग्रह करने का स्वर्णिम अवसर होता है विद्यार्थी जीवन

विद्यार्थी कॉल हर तरह की ऊर्जा संग्रह करने का स्वर्णिम अवसर होता है। इस अवस्था में हमारा खान-पान कैसा हो, किस तरह का भोजन हम प्रयोग करें, जिससे हमारा तन-मन-शुद्ध हो, पवित्र हो, हमारी याददाश्त उत्तम हो, क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन मस्तिष्क निवास करता है। स्वस्थ विद्यार्थी ही जीवन में सफलता प्राप्त करता है। अपने विद्यार्थी जीवन को सुखद और सफल बनाने के लिए उचित आहार का प्रयोग करें। परमात्मा ने प्रकृति के द्वारा इंसान को अनमोल खाद्य पदार्थ प्रदान किए हैं। वर्षा ऋतु में काले जामुन आते हैं। जामुन काले जरूर होते हैं लेकिन उनमें गुणविशेष होते हैं। जामुन खाने से रक्त शोधन होता है, चेहरे पर निखार आता है और चिड़चिड़ापन दूर होता है। बरसात के मौसम में उमस ज्यादा होने से त्वचा के रोग होने का भय रहता है, पाचन क्रिया बिगड़ने का भी डर रहता है और उन दिनों में बुखार होने की भी ज्यादा संभावनाएं होती है। इसीलिए जामुन निरोग रहने के लिए अचूक औषधि है। विद्यार्थी को ज्यादा से ज्यादा जामुन का प्रयोग करना चाहिए। बुद्धि को तीव्र करने और दिमाग को तेज रखने के लिए पालक प्रभु का वरदान है। पालक ब्रेन टॉनिक है इसमें उपयुक्त औषधि दिमाग के लिए संसार में नहीं है। आप इसको कच्चा भी खा सकते हैं, सूप बनाकर भी ले सकते हैं और सब्जी के रूप में भी खा सकते हैं। सत्य है कि पालक में कोई विशेष स्वाद नहीं होता। यह न तो मीठा होता है न तीखा होता है और ना ही पूरा नमकीन होता है। इसका स्वाद थोड़ा कसैला जरूर होता है और इसके सेवन से दिमाग तरोताजा रहता है। आजकल विदेशों में पालक खाने का बहुत प्रचलन है। कुछ समय पहले कैलिफोर्निया के डॉक्टरों और साइंटिस्टों ने मिलकर पालक के ऊपर रिसर्च किया। इसके बाद उन्होंने एक बहुत बड़ी सभा में प्रस्ताव पारित किया बच्चों को पालक खाना सिखाना चाहिए। उन्होंने अपने आर्टिस्टों को आदेश दिया कि आप कोई ऐसा दृश्य प्रस्तुत करें जिससे बच्चों में पालक खाने की ललक पैदा हो। उन्होंने एक कार्टून बनाया बहुत पतला सा कमजोर से दिखने वाला, लेकिन जैसे ही वह पालक का सेवन करता है उसके अंदर जबरदस्त ताकत आ जाती है। वह लोगों को उठा उठाकर फेंकने लग जाता है। उसका दिमाग बहुत तेज हो जाता है इसको दिखाने के पीछे भावना यही थी कि वहां के बच्चों को पालक का ज्यादा से ज्यादा सेवन करना चाहिए। प्राकृतिक चीजें बहुत असाधारण हैं, इनका सेवन करने से बहुत लाभ होता है। एक अंकुरित अन्न होता है उसका प्रयोग करने से भी विशेष लाभ होते हैं। अंकुरित अन्न जैसे - मूंग, मोठ, चना। इनको 3 दिन तक भिगो कर रखने से यह अंकुरित हो जाते हैं, इनको धोकर मुनक्का या किशमिश मिलाकर सुबह के समय नाश्ते के विकल्प में लेने से बहुत लाभ होता है। अंकुरित अन्न दिमाग को तरोताजा रखने में सहायक होते हैं। आजकल तो इसको कैंसर जैसी भयानक बीमारी का भी ईलाज मानते हैं। इसके अलावा गेहूं का दलिया - दूध वाला या नमकीन दलिया भी प्रयोग कर सकते हैं। यह सब पदार्थ विद्यार्थी के लिए स्वास्थ्यवर्धक हैं। आंवला भी एक अद्भुत फल है। सारी दुनिया में इतने प्रकार के फल हैं कि शायद धरती पर कोई ऐसा आदमी हो जिसने सारे फल खाए हों। लेकिन यहां पर आंवले की बात करना ही उचित होगा, क्योंकि आंवला सारे फलों में उत्तम है, बुद्धि को तेज बनाने में सहायक होता है, शरीर को स्वस्थ रखता है, चेहरे का तेज बढ़ाता है। पर आंवले को भी बच्चे खाने में आनाकानी करते हैं क्योंकि इसमें भी कोई खास स्वाद नहीं होता। यह परमात्मा की व्यवस्था है जो पदार्थ स्वाद लगता है वह स्वास्थ्य नहीं देता और जो स्वास्थ्य देता है वह स्वाद नहीं देता। दूसरी तरफ जो खाद्य पदार्थ स्वास्थ्य में बाधक हैं उनमें कमाल का स्वाद आता है। इनमें फास्ट फूड हैं उन्हें बच्चे शौक से खाते हैं। लेकिन जो इन्हें छोड़कर अपने स्वास्थ्य की चिन्ता करते हैं, वे बड़े आनंद से आंवला खाते हैं। आंवले का प्रयोग भोजन के साथ सलाद के रूप में भी कर सकते हैं, आचार और मुरब्बे के रूप में भी खा सकते हैं, बिना काटे भी आप उसे अपने दांतों से काट-काट कर खा सकते हैं, आंवला खाने के बाद पानी पीने में मीठा लगता है। वैसे नियमित दो-चार दिन सेवन करने से आंवला आपको खाने में स्वाद देने लगेगा और स्वादिष्ट न भी लगे फिर भी आप उसे चाव से खाएंगे। क्योंकि आंवला अमृत तुल्य है। इससे स्मरण शक्ति बढ़ती है। ऐसे ही एक फल स्टॉबरी है। उसके सेवन करने से भी ब्रेन मस्तिष्क स्वस्थ रहते हैं यह फल न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया में अधिक होता है। लाल अंगूर का प्रयोग कर सकते हैं। विद्यार्थी को दूध को पीना चाहिए। दूध का सेवन करने से शरीर के सभी अंग पोषित होते हैं। भारत में दूध सरलता से प्राप्त होता है लेकिन कोरिया, थाईलैंड, वियतनाम, बर्मा, पोलैंड, चाइना और जापान आदि देशों में दूध का उत्पादन कम मात्रा में होता है। जापानी लोग अब कुछ दूध का सेवन करने लगे हैं लेकिन चाइनीज अभी भी दूध नहीं पीते इसलिए वे लोग लंबे कद वाले नहीं होते। कुछ समय पहले तो वहां पर यह हालत थी कि जो भारतीय लोग वहां पर जाकर रहने लगे थे उनके बच्चों को देखकर वहां के बच्चे दूर भाग जाते थे, क्योंकि भारतीय बच्चे दूध पीकर स्कूल जाते थे और उन

- जारी पृष्ठ 6 पर

.....प्राकृतिक चीजें बहुत असाधारण है, इनका सेवन करने से बहुत लाभ होता है। एक अंकुरित होता है उसका प्रयोग करने से भी विशेष लाभ होते हैं। अंकुरित अन्न जैसे - मूंग, मोठ, चना। इनको 3 दिन तक रोककर रखने से यह अंकुरित हो जाते हैं इनको धोकर मुनक्का या किशमिश मिलाकर सुबह के समय नाश्ते के विकल्प में लेने से बहुत लाभ होता है। अंकुरित अन्न दिमाग को तरोताजा रखने में सहायक होते हैं। आजकल तो इसको कैंसर जैसी भयानक बीमारी का भी ईलाज मानते हैं। इसके अलावा गेहूं का दलिया - दूध वाला या नमकीन दलिया भी प्रयोग कर सकते हैं। यह सब पदार्थ विद्यार्थी के लिए स्वास्थ्यवर्धक हैं। आंवला भी एक अद्भुत फल है।

Makers of the Arya Samaj : Maharishi Dayanand Saraswati

Continue From Last issue

The Man

Swami Dayanand was a Brahmchari, that is to say, he kept up his vow of celibacy throughout his life. He derived all his strength and courage from it. There is a story which proves this. Swami Dayanand was once staying at Mirzapur in the United Provinces of Agra and Oudh. One day he went out for a walk in the company of some people. He was walking along a narrow pathway, when he saw a very big bull running towards him. The bull seemed to be in a fury, for his eyes shot fire and his tail was in the air. No sooner did Swami Dayanand's companions see this than they ran for their lives. But Swami Dayanand was not afraid. He stood there, calm and firm. To the great surprise of everybody, the bull never made for Swami Dayanand, but went off in a different direction.

When all was over, one of his companions said to him, "Sir you ran a great deal of risk in doing that. What would have happened if the bull had tried to toss you with its horns." Swami Dayanand smiled when he heard this and said in a tone of unconcern, "The bull would not have done any harm to me. I would have driven it away with the strength of my arms." These were no idle words. They were quite true. Swami Dayanand possessed a great deal of strength and was very confident of it. This was due to his vow of celibacy. This was not an easy thing for him to do. But Swami Dayanand held nothing dearer in his life than this.

Swami Dayanand never used his strength for doing harm to others. He used it always for their good. His strength was equalled only byhis mercy. None could be more kind and compassionate than he. It has already been shown how mercifully he treated his cook who had poisoned him. He did the same in the case of an other man also.

This man was a very poor Brahmin of Anoop Shahar. When Swami Dayanand went there he delivered a number of lectures. Many of these were against some of the most cherished beliefs of the orthodox Brahmins, such as idol-worship. His lectures, therefore, produced much ill-will against him in their hearts. Some of them planned to poison him and they chose this man to effect their purpose.

..... Swami Dayanand forgave his enemies.

Once he was in Bombay delivering lectures on the Vedic religion. In some of these he tried to expose the leaders of other creeds. One of these was Ballabhacharya, a religious leader. This was much resented by his followers. Some of them went so far as to make plans about effecting his death. They bribed his servant. They even gave him a letter in writing which said that ifhe succeeded in killing Swami Dayanand, he would receive a reward of one thousand rupees. To begin with, they gave him five rupees in cash and five seers of sweets. .....

He went to Swami Dayanand and offered him his best regards. He even touched his feet and expressed to him his deep gratitude for what he had been doing or his people. Then, as a token of his sincerity and goodwill, he gave him a betel-leaf. Swamiji took it and began to chew it without knowing that it contained poison. But very soon he realized, on account of its peculiar taste, that it contained poison. He at once spat it out. Afterwards he performed certain yogic exercises to get over its evil effects. He then became quite well again.

But the Brahmin was arrested and thrown into prison. This was done by an officer who was a great admirer of Swami Dayanand. He succeeded in arresting the criminal only after much trouble. He thought that by doing so he would win the favour of Swami Dayanand. But when he went to see him, Swami Dayanand was very cold towards him. He could not understand this and asked him the reason. Swami Dayanand said, "I can never forgive you for getting a poor Brahmin into trouble. You should not have thrown him into prison, but should have let him off. Remember that I have come into this world to set people free and not to add to their miseries."

But this was not the only time when Swami Dayanand forgave his enemies. Once he was in Bombay delivering lectures on the Vedic religion. In some of these he tried to expose the leaders of other creeds. One of these was Ballabhacharya, a religious leader. This was much resented by his followers. Some of them went so far as to make plans about effecting his death. They bribed his servant. They even gave him a letter in writing which said that ifhe succeeded in killing Swami Dayanand, he would receive a reward of one thousand rupees. To begin with, they gave him five rupees in cash and five seers of sweets.

Swami Dayanand somehow learnt of this. He at once sent for the servant and demanded from him the whole truth. The poor fellow began to tremble with fear. Then he fell at the feet of Swami Dayanand and told him the whole truth.

To be continued.....

With thanks By: "Makers of Arya Samaj"

संस्कृत वाक्य प्रबोध — शरीरावयवप्रकरणम्

गतांक से आगे –

संस्कृत	हिन्दी
431. अस्य शिरः स्थूलं वर्त्तते।	इसका सिर बड़ा है।
432. देवदत्तस्य मूर्द्धकेशाः कृष्णा वर्त्तन्ते।	देवदत्त के सिर में बाल काले हैं।
433. मम तु खलु श्वेता जाताः।	मेरे तो सफेद हो गये।
434. त्वापि केशा अर्द्धश्वेताः सन्ति।	तेरे भी बाल आधे सफेद हैं।
435. अस्य ललाटं सुन्दरमस्ति।	इसका माथा सुन्दर है।
436. अयं शिरसा खल्वाटः।	इसके सिर में बाल नहीं हैं।
437. तस्योत्तमौ भ्रुवौ स्तः।	उसकी अच्छी भौंहे हैं।
438. श्रोत्रेण शृणोषि न वा ?	कान से सुनता है वा नहीं ?
439. शृणोमि।	सुनता हूँ।
440. अनया स्त्रिया कर्णयोः प्रशस्तान्या भूषणानि धृतानि।	इस स्त्री ने कानों में अच्छे सुन्दर गहने पहिने हैं।
441. किमयं कर्णाभ्यां बधिरोऽस्ति।	क्या यह कानों से बहरा है ?
442. बधिरस्तु न, परन्तु श्रवणे ध्यानं न ददाति।	बहिरा तो नहीं है परन्तु सुनने में ध्यान नहीं देता।
443. अयं विशालाक्षः।	यह बड़े नेत्रवाला है।
444. त्वं चक्षुषा पश्यसि न वा ?	तू आंख से देखता है वा नहीं ?
445. पश्यामि, परन्त्विदानीं मन्ददृष्टिर्जातोऽहमस्मि।	देखता हूं, परन्तु इस समय मन्ददृष्टि अर्थात् थोड़ी दृष्टिवाला हो गया हूँ।
446. इदानीं ते रक्ते अक्षिणी कथं वर्त्तेते ?	इस समय तेरी आंखे लाल क्यों हैं ?
447. यतोऽहं शयनादुत्थितः।	सो कर उठा हूं इस कारण से।

क्रमशः - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

पृष्ठ 5 का शेष

बच्चों को दूध में से स्मैल आती है। वहां के निवासी मांसाहार ज्यादा पसंद करते हैं। मछली, सांप, छछूंदर कीड़े-मकोड़ों का पूरी तरह प्रयोग करते हैं इसलिए उनको दूध में से दुर्गंध आती है लेकिन अब वहां पर भी दूध का प्रयोग होने लगा है। अब वहां टीवी पर विज्ञापन दिखाए जाते हैं जो दूध पीएगा, सुंदर होगा, उसका दिमाग तेज होगा, उसकी हाइट भी अच्छी होगी। आजकल बच्चे दूध भी नहीं पीना चाहते हैं, जो बच्चे दूध पीते हैं वे छानकर पीते हैं। छानकर पीने से पोषक तत्व कम हो जाते हैं। गाय का दूध सबसे उत्तम होता है। डाइजेस्ट भी जल्दी होता है और दिमाग के लिए ज्यादा फायदेमंद होता है। गाय के दूध के अभाव में भैंस का दूध प्रयोग करना अच्छा है। दूध से आंते निर्मल बनती हैं, शरीर निरोग रहता है। भारत में तो दूध दही का खाना शुभ माना जाता है क्योंकि शरीर को पोषण मिलता है और बुद्धि तेज होती है शरीर को स्वस्थ रखने के लिए खान-पान का ध्यान रखना जरूरी है। कब्ज आदि रोगों का ना होने देना। कब्ज होने से सिर में दर्द होने लगता है। गैस बन जाती है। बुद्धि मलिन हो जाती है। कब्ज के कारण और निवारण होते हैं। कब्ज के कारण नींद ना आना या कम नींद आना, भोजन कम करना, ज्यादा करना, अनुचित भोजन, करना समय पर भोजन ना करना, भोजन के बीच में, तुरंत बाद पानी पीना, आमतौर पर पानी कम मात्रा में पीना और भी अनेक कारण हो सकते हैं। कब्ज के निवारण के लिए पूरी नींद लेना, नियमित व्यायाम करना, समय पर भोजन लेना और भोजन करने के 1 घंटे बाद पानी पीना और पानी ज्यादा मात्रा में पीना, दिन में कई बार खुलकर हंसना, प्रसन्न रहना। इन बातों का ध्यान रखने से कब्ज नहीं होता। अगर किसी को कब्ज हो भी जाए तो हरड़, बहेड़ा और आंवला इनको मिलाकर चूर्ण बनाया जाता है इसको त्रिफला कहते हैं। त्रिफला चूर्ण को गर्म दूध या पानी से प्रयोग करने पर पेट ठीक रहता है। विद्यार्थी को अपने शरीर के प्रति हर समय सजग और सचेत रहना चाहिए, क्योंकि यह अवस्था प्राप्त करने की, कुछ कर दिखाने की और किसी भी स्थिति में सफलता प्राप्त करने की होती है। लेकिन आधुनिकता के इस युग में, जीवन के हर मोड़ पर, परीक्षा होती है। लेकिन जिसने विद्यार्थी जीवन को पास कर दिया वह हर मोड़ पर विजय प्राप्त करता है। इसलिए अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

आर्यसन्देश साप्ताहिक में बाल आर्य प्रतिभा विकास स्तम्भ

आर्यसन्देश साप्ताहिक के आगामी अंकों में 'बाल आर्य प्रतिभा विकास' का एक नियमित स्तम्भ आरम्भ किया जाएगा। इस स्तम्भ में आर्य परिवारों के सभी होनहार बच्चों को सादर आमन्त्रण है कि वे अपनी विशेष योग्यतानुसार स्वरचित कविता, भजन, महापुरुषों के चित्रों की पेंटिंग, शिक्षा या खेल के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि अथवा किसी भी प्रतियोगिता में सफलता प्राप्ति का प्रमाण सहित समाचार बच्चे के फोटो के साथ हमें भेजें। उसे उचित स्थान पर प्रकाशित किया जाएगा। **- सम्पादक**

ऋग्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज शकरपुर दिल्ली 92 के पूर्व पुस्तकाध्यक्ष स्व0 श्री ईश्वर चंद्र त्यागी जी के जन्मदिन पर उनके निवास स्थान शकरपुर दिल्ली -92 में, दिनांक 24 से 29 सितंबर तक दोनों समय ऋग्वेद पारायण महायज्ञ आयोजित कराया, जिसकी पूर्णाहुति 29.09.2021 को गुरुकुल बरनावा (लाक्षाग्रह) के आचार्य गुरु वचन शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुई। अपने प्रवचनों मे आचार्य श्री ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी और आर्य समाज के सिद्धांतों को बहुत ही मार्मिक ढंग से लगातार छ दिनों तक समझाया। क्षेत्रिय जनता ने महर्षि दयानंद सरस्वती के और आर्य समाज के सिद्धांतों के प्रवचनों को सुनकर आचार्य जी की भूरी भूरी प्रशंसा की। पूर्णाहुति के दिन यजमान की ओर से आर्य समाज का साहित्य भी बांटा गया। आर्य समाज शकरपुर का विशेष सहयोग रहा। स्व० ईश्वर चंद्र त्यागी जी ने चारों वेदों के पारायण यज्ञ कराने का संकल्प लिया था जिसमें उन्होंने तीन वेदों का पारायण तो अपने जीवन काल में ही करा दियें थे, चौथा ऋग्वेद पारायण का संकल्प उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अरुणलता त्यागी जी ने संपन्न कराया।

- पतराम त्यागी

प्रथम पृष्ठ का शेष

कोलकाता में यजुर्वेद के बंगला भाषानुवाद का लोकार्पण समारोह ....

परिणाम स्वरूप वेदों के अमृत ज्ञान को बंगाल और बंगलादेश में भी सभी बंगभाषियों को पढ़ने में सुविधा होगी। सब लोग वैदिक धर्म, संस्कृति ओर संस्कारों से लाभ प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

2 अक्टूबर 2021 को आर्य समाज कलकत्ता द्वारा बंगला भाषा अनुवाद किए हुए यजुर्वेद का विमोचन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी के कर-कमलों द्वारा किया गया।

इस अवसर पर सर्वश्री राजेन्द्र जायसवाल, पूर्व प्रधान आर्य समाज विधान सरणी, श्रीराम आर्य, पूर्व प्रधान आर्य समाज विधान सरणी, रमेश अग्रवाल, आर्य समाज बड़ा बाजार, मदन लाल सेठ, मन्त्री आर्य समाज विधान सरणी, सुरेश अग्रवाल पुस्तकाध्यक्ष, आर्य समाज विधान सरणी और यजुर्वेद भाष्य के बंगला भाषा में अनुवाद करने वाले श्री सतीश मण्डल जी सहित अनेक अन्य आर्यजन उपस्थित थे। इससे पूर्व जब श्री धर्मपाल आर्य जी दिल्ली से चलकर कलकत्ता एयरपोर्ट पर पहुंचे तो आर्य समाज कलकत्ता की ओर से उनका माल्यर्पण द्वारा भव्य स्वागत किया गया। इस पूरे कार्यक्रम में आर्यजनों का उत्साह देखने दिखाने लायक था।

श्री धर्मपाल आर्य जी ने यजुर्वेद के विमोचन के उपरांत उपस्थित महानुभावों को सम्बोधित करते हुए इस सार्थक सफल प्रयास के लिए बधाई देते हुए कहा कि आर्य समाज कलकत्ता के प्रधान श्री मनीराम आर्य जी, मंत्री श्री मदनलाल सेठ जी सहित सभी अधिकारियों, कार्यकर्ताओं, सदस्यों और अनुवादक श्री सतीश मण्डल जी को इस अनुपम उपलब्धि के लिए बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ। आपने मानवता की भला के लिए जो ऐतिहासिक कार्य किया है वह अदभुत और अनुपम सिद्ध होगा। इससे बंगाल में वेद के प्रचार प्रसार को अधिक बल मिलेगा, सारा संसार आर्य बनेगा। श्री प्रधान जी ने वेदों की महिमा और महर्षि दयानंद जी के उपकारों को भी याद किया, आर्य समाज के नियमों का उल्लेख करते हुए वेदों के स्वाध्याय करने पर भी बल दिया।

आर्य समाज कलकत्ता की ओर से प्रधान श्री मनीराम जी और मंत्री श्री मदनलाल सेठ जी सहित सभी अधिकारियों ने श्री धर्मपाल आर्य जी का धन्यवाद किया। प्रधान जी को एयरपोर्ट तक विदाई देने के लिए भी आए। इस तरह प्रेम सोहार्द के वातावरण में कार्यक्रम सम्पन हुआ।

पृष्ठ 2 का शेष

का विरोध कर सकता है? क्या तनिष्क के विज्ञापन में किसी तिलक लगाए हिन्दू को किसी हिजाब वाली महिला के साथ दिखाया जा सकता है? यदि नहीं तो आखिर ये सुधार की तलवार और सामाजिक सद्भावना, सब एकतरफा ही क्यों हैं?

अगर होली के रंग नमाज में आड़े आ रहे हैं तो क्या कल ईद की सैवइयों के खिलाफ भी ऐसा ही वैमनस्य फैलाया जा सकता है? वहीं, एक दूसरी लघु फिल्म 'ईश्वर अल्लाह तेरो नाम' में दिखाया गया है कि जब एक हिन्दू बच्चा मंदिर में पुजारी को भोजन और दक्षिणा देने निकलता है और मस्जिद पहुंच जाता है। यह समझाकर कि ईश्वर-अल्लाह एक हैं, मंदिर-मस्जिद एक हैं, पंडित जी को दिया जाने वाला खाना मौलवी को देता है और एक जरूरतमंद को दक्षिणा देकर वापस आ जाता है। हैरानी की बात है कि दोनों ही कहानिया साप्रदायिक सद्भाव की हैं, लेकिन मुस्लिम बच्चे को मस्जिद जाते हुए होली के रंगों से भी परहेज है, पर हिन्दू बच्चा मंदिर की जगह मस्जिद पहुंच जाए तो गुरेज नहीं! क्या रंगों से बचते बच्चों को यह बात नहीं पता कि 'ईश्वर-अल्लाह एक' हैं? यह सीख क्या सिर्फ हिन्दुओं के लिए हैं?

अब शोले के पटकथा लेखक थे सलीम-जावेद. फिल्म में वीरू मंदिर में शिव की मूर्ति की पीछे छिपकर बसंती से फ्लर्ट करता है। यानी मंदिर का इस्तेमाल फ्लर्टिंग के लिए किया गया। गांव के सबसे अमीर ठाकुर परिवार के घर लालटेन जलती है, पर रहीम चाचा की मस्जिद में लाउड स्पीकर बज रहा है। हो सकता है अमीर ठाकुर के घर लाइट ना हो पर मस्जिद में सोर उर्जा से लाउडस्पीकर बज रहा हो! महिला समलैंगिक संबंधों पर बनी फिल्म फायर में दोनों प्रधान महिला चरित्रों के नाम सीता और राधा रखे गए। क्या ऐसे ही कभी फातिमा और मारिया नाम की दो महिला चरित्रों के बीच अंतरंग दृश्य फिल्माए जा सकते हैं?

अब रही सदभावना सन्देश की बात तो ऐसे दिया जा सकता था कि हिन्दुओं को होली खेलता देख मुस्लिम बच्चा भी होली खेलने लगता है। उसका अब्बू उसे रंगों में रंगा हुआ देखकर पूछता आज मस्जिद नहीं गया? बच्चा कहता नहीं आज होली है इस देश का त्यौहार है। या फिर इस दीवाली पटाखे सड़कों पर नहीं मस्जिद में जलायें तब हम मानते कि ये धर्मनिरपेक्षता और सदभावना का बिगुल है।

- सम्पादक

प्रेरक प्रसंग

मुझे चारपाई पर ले चलिए

ऋषिवर के पुराने सुशिष्यों ने वैदिक धर्म के प्रचार व देश धर्म की रक्षा के लिए जो तप-त्याग किया है-वह ईसा व बुद्ध महात्मा के शिष्यों की साधना से कम नहीं है। पण्डित विष्णुदत्तजी एडवोकेट पंजाब के एक प्रमुख नेता व कुशल लेखक थे। उन्होंने लिखा है कि कहीं एक बहुत बड़ा तालुकेदार अपनी बिरादरीसहित ईसाई बनने लगा। आर्यो को इसकी सूचना दी गई। आर्यभाई भागे-भागे अपने एक पूज्य विद्वान् शास्त्रार्थी के पास पहुँचे और सब वृत्तान्त सुनाया। वृत्तान्त तो सुना दिया, परन्तु उस विद्वान् के पास जाना निष्फल दीख रहा था। कारण? वह बहुत रुग्णावस्था में चारपाई पर पड़े थे। उस आर्यविद्वान् ने कहा, ''मुझे चारपाई पर ही किसी प्रकार से वहाँ पहुँचा दो। अपनी तड़प से सबको तड़पा देनेवाले आर्यवीर अपने महान् सेनानी की चारपाई उस स्थान पर ले-गये।

पादरियों को निमन्त्रण दिया गया कि आगर सत्य-असत्य का निर्णय कर लें। पादरी आ गया। चारपाई पर लेटे-लेटे उस आर्य महारथी ने शास्त्रार्थ किया। इसका परिणाम वही हुआ जिसकी आशा थी। एक भी व्यक्ति ईसाई न बना।

आर्यपुरुषो! क्या आप जानते हैं कि यह चारपाई पर लेटे-लेटे शास्त्रार्थ करनेवाला सेनानी कौन था?

यह था धर्म-धुन का हिमालय वीतराग स्वामी दर्शनानन्द!

यह घटना उत्तरप्रदेश की ही लगती है। पंजाब, हरियाणा, हिमाचल में तो तालुकेदार शब्द प्रचलित ही नहीं है। न जाने स्वामीजी के जीवन में ऐसी कितनी घटनाएँ घटीं। उन्होंने पग-पग पर अपनी श्रद्धा के अद्भुत चमत्कार दिखलाये।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

शारदीय नवरात्र के अवसर पर गायत्री महायज्ञ

आर्यसमाज बिडला लाइन्स, कमला नगर, दिल्ली में शारदीय नवरात्र के अवसर पर दिनांक 7 अक्तूबर से 13 अक्तूबर, 2021 तक प्रतिदिन सायं 4 से 6 बजे तक आचार्य कुंवर पाल शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया जाएगा। समापन समारोह 14 अक्तूबर को आयोजित होगा। भजन श्री गौरव आर्य जी एवं प्रवचन श्री विनय आर्य जी के होंगे। ऋषि लंगर 7:30 बजे से होगा।

- संजीव बजाज, प्रधान

ब्रेल लिपि में

महर्षि दयानन्द जीवनी

मात्र 1000/-रु

ब्रेल लिपि में

सत्यार्थ प्रकाश

मात्र 2000/-रु

अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयों को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।

-: प्राप्ति स्थान :-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली, मो. 9540040339

गुरुकुल हेतु आचार्या चाहिए

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल, शास्त्री नगर, लुधियाना में ब्रह्मचारीणियों को वैदिक शिक्षा देने हेतु आचार्या की आवश्यकता है। योग्यता - एम.ए. हिन्दी/संस्कृत। आयु कम सेकम 30 वर्ष। भोजन एवं आवास की सुविधा प्रदान की जाएगी। वेतन/मानदेय योग्यतानुसार। इच्छुक अपना आवेदन पत्र 10 नवम्बर, 2021 से पहले गुरुकुल कार्यालय में जमा करवा दें अथवा ईमेल rsmodelsss@yahoo.co.in पर भेजें। अधिक जानकारी के लिए श्री जगजीव बस्सी जी, 9915042585 से सम्पर्क करें।

- सुरेश मुंजाल, प्रधान

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 4 अक्तूबर, 2021 से रविवार 10 अक्तूबर, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 07-08/10/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 06 अक्तूबर, 2021

प्रतिष्ठा में,

विवाह आदि शुभ अवसरों पर भेंट हेतु तांबे के यज्ञकुण्ड सैट

मूल्य 1100/- रु. मात्र

परिवारों में यज्ञ को बढ़ावा देने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से भेंट हेतु 9 पात्रों के यज्ञ कुण्ड के सैट तैयार कराए गए हैं। यह सैट आप किसी भी शुभ अवसर जन्मदिन, वर्षगांठ, विवाह संस्कार या अन्य किसी भी शुभ मौके पर आप किसी भी परिवार को, व्यक्ति को भेंट कर सकते हैं या अपनी संस्था के उत्सवों पर आमन्त्रित अतिथियों को भी भेंट कर सकते हैं। आइए, एक नई परम्परा का शुभारम्भ करें - घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ की भावना को साकार करें और यज्ञ के प्रचार-प्रसार में सहयोगी बनें।

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी बने प्रधान

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर का त्रैवार्षिक साधारण अधिवेशन दिनांक 3 अक्तूबर, 2021 को सम्पन्न हुआ जिसमें श्री विजय सिंह भाटी जी - कार्यकारी प्रधान, श्री किशन लाल गहलोत- मन्त्री, श्री यशपाल आर्य-

उपमन्त्री, श्री जय सिंह गहलोत जी को कोषाध्यक्ष के रूप में सर्वसम्मति से निर्वाचित किए गए। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी को न्यास का पदेन प्रधान निर्वाचित किया गया।

इसके साथ ही आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय के अधिष्ठाता आचार्य श्री ओम प्रकाश आर्य जी को सर्वसम्मति से न्यास का आजीवन ट्रस्टी बनाया गया।

सभी आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान महोदयों के साथ-साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने प्रतिनिधि रूप में इस अधिवेशन में भाग लिया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसन्देश परिवार एवं समस्त आर्य जगत की ओर से नव निर्वाचित समस्त अधिकारियों को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

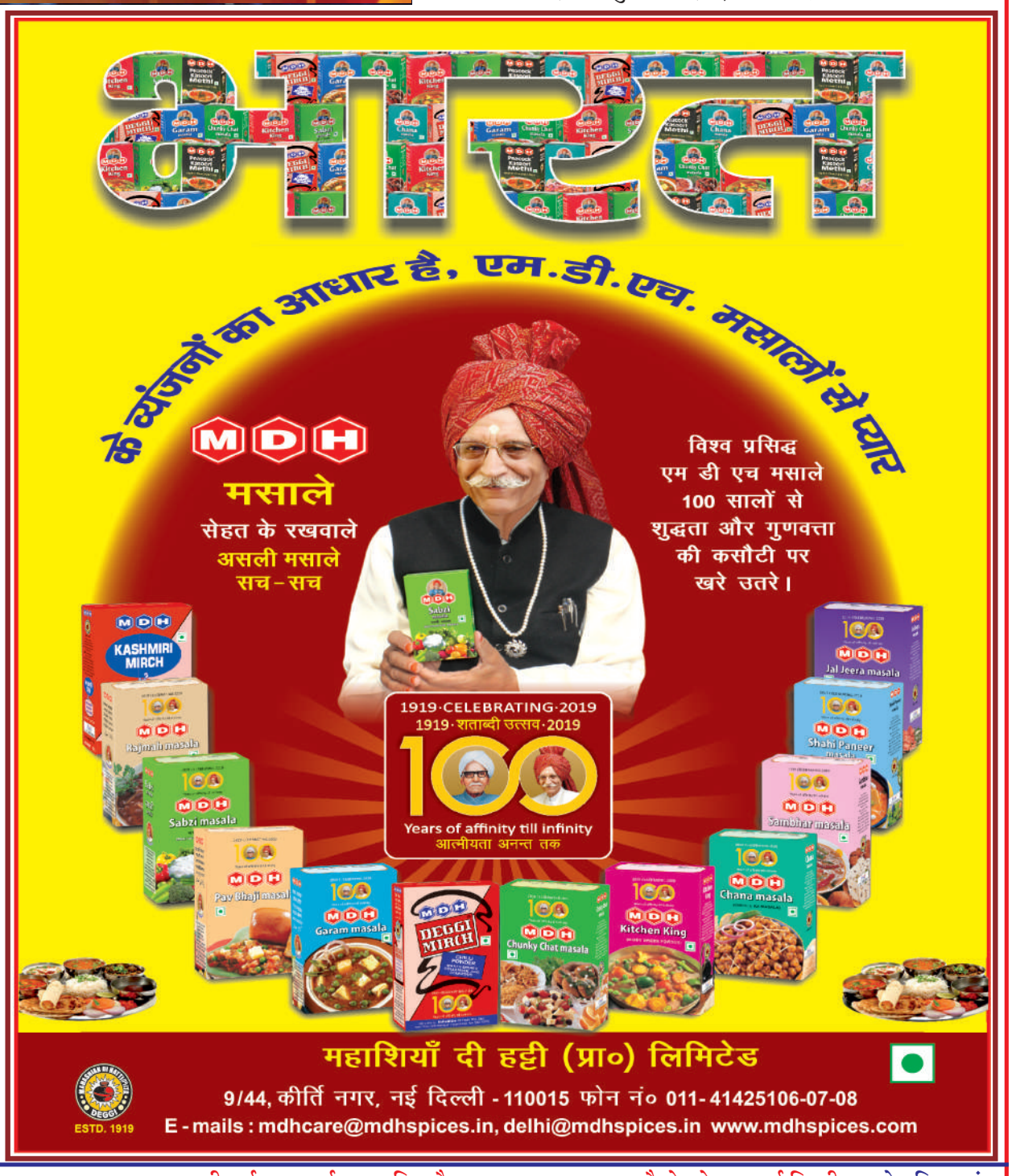

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह